Volume-1, Issue-1, February 2018

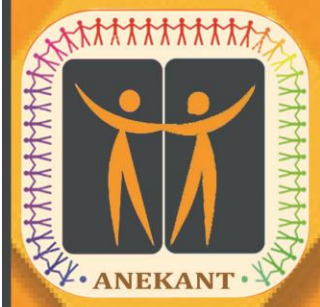

ANEKANT

Journal of Humanities and Social Sciences

'हिंदी' और 'मराठी' नाटक में 'द्रौपदी' चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन

प्रतिभा आनंदराव जावळे
हिंदी विभाग
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय, बारामती.४१३१०२
ई-मेल : pratibhajawale16@gmail.com

सार : नारी का समाज में स्वतंत्र व्यक्तित्व है। उसका अपना एक रूप है। सृष्टि का मूल नारी में ही माना जाता है। प्राचीन धर्मग्रंथों में असकी प्रतिमा अलग अलग रूप में चित्रित है। कभी उसका सम्मान किया है तो कभी उसे अपमानित किया है। महाभारत में 'द्रौपदी' के चरित्र को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है। हिंदी और मराठी दो अलग नाटकों में उस के चरित्र को अलग अलग रूप में चित्रित किया है। परिस्थिति वही है लेकिन उसके व्यक्त भाव हमें अलग रूप में चित्रित होते दिखाई देते हैं।

प्रस्तावना : भारतीय नारी सदियों से संस्कारों के बोझ तले दबी है। उसे अबला, शक्तिहीन तथा पुरूष के अधीन मानकर उसके साथ किसी भी तरह के व्यवहार करने की स्वतंत्रता पुरूष मानता है। गिरिराज किशोर लिखित नाटक 'प्रजा ही रहने दो' और विद्याधर पुंडलिक लिखित नाटक 'माता द्रौपदी' इन दो नाटक में द्रौपदी का चरित्र अलग-अलग रूप चित्रित है। एक प्रजा का प्रतिनिधित्व करती है तो दूसरा चरित्र माता द्रौपदी का है जिसने सबकुछ सहा है। इसके साथ सबकुछ खोया भी है। चरित्र एक है लेकिन भाव अलग नजर आते है। यही नाटक की खासियत है।

उद्देश्य : प्रस्तुत शोधलेख का उद्देश्य इस प्रकार है -

१. नारी शोषण,अन्याय के विरोध में समाज और परिवार में जागरूकता निर्माण करना।

२. नारी के विकास, उन्नति तथा अधिकार प्रति सजग रहना ।

३. नए विचार, मानसिकता, दृष्टिकोन आज की स्थिति में नारी की सोच को बढ़ावा देना!

साठोत्तरी हिंदी साहित्य में कविता, कथा, कहानी, नाटक आदि विधाओं में कथ्य और शिल्प की कई कोटियाँ दृष्टिगत होती है। नाटक एक दृश्यविद्या है। नाटक और रंगमंच का गहरा संबंध होने के कारण सन साठ के बाद इसमें अद्‌भूत परिवर्तन दिखाई देता है। इस समय के नाटक मौलिकता, जटिलता और सर्जनात्मकता का सबूत देते है। नाटकों के कथा में मुख्य जो पहलू है उसमें रिश्तो की कडवाहट, संबंधों का बिखराव, मुल्यहीनता, सामाजिक, राजनितिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रश्न इन नाटकों के विषय रहें है। इस समय के नाटककारों ने पौराणिक, आख्यानों, तथा पात्रों को लेकर आधुनिकता के साथ जोड़कर अलग नाटकों की निर्मिती की दिखाई देती है।

मराठी और हिंदी नाटकों के विषय में साम्य और वैषम्य भी दिखाई देता हैं। एक ही समय के देशकाल वातावरण में चित्रित पात्र को उठाकर विचार किया गया है। एक भाषाा का साहित्यकार जिस दिशा में विचार करता हैं जैसे पौरानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनितीक उसी प्रकार के अन्य भाषा के लेखक तथा

साहित्यकार भी उसी दिशा में विचार, चिंतन मनन तथा चिकित्सा करते हैं। इसी चिंतन और चिकित्सा के द्वारा नये विचार, नये मुल्य, नये पहलू साहित्य में दिखाई देते है।

हिंदी नाटककारों में गिरिराज किशोर तथा मराठी नाटककारों मे विद्याधर पुंडलिक समकालीन नाटककार है। गिरिराज किशोर का नाटक 'प्रजा ही रहने दो' तथा विद्याधर पुंडलिक का नाटक 'माता द्रौपदी' महाभारत कालीन पात्र द्रौपदी के जीवन से जुडी कथा है।

हिंदी नाटककारों में गिरिराज किशोर एक प्रतिष्ठित नाटककार के रूप में सामने आते है। उनका 'प्रजा ही रहने दो' महाभारत की कथा पर आधारित नाटक है, यह एक प्रतीक नाटक है। महाभारत काल में धृतराष्ट्र अपनी सत्ता बनायें रखने के लिए युध्द स्वीकारता है जिसमें निषपाप लोगों की जाने चलीं जाती है। आज भी राजनीतिक नेता अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए कुटिलता, का प्रयोग करके निरपराध लोगों को विनाश के मुँह में धकेलते है। निरपराध लोगों के रूप में द्रौपदी का चित्रण है। उसकी आवाज दबाई जाती है। द्रौपदी की भावनाओं को कोई समझ नहीं पाता है। राजदरबार में हुआ अपमान द्रौपदी भूल नहीं पाती है। अपने अपमान का बदला लेने की आग उसके मन में धधकती है। वह अपने अपमान के खिलाफ आवाज भी उठाती है। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा करना जानती है। द्रौपदी ने

अपने आत्मसन्मान के लिए विद्रोह किया तो उसे वाचाल कहकर धिक्कारा जाता है। द्रौपदी का वाचाल होना उस प्रजा का प्रतीक है जो छल-बल से सताई जाती है। पति-पत्नी में पति का धर्म होता है हर मुसीबत में पत्नी की रक्षा करना। द्रौपदी पाँच पतियों से रक्षित होकर भी उसकी बेईज्जती होती है। द्रौपदी कहती है - ''एक पति होता तो स्थितियाँ इतनी न उलझती। पाँच -पाँच पतियों द्वारा रक्षित पत्नी को अंततः अपनी रक्षा स्वयं ही करनी पडती हैं।''[१]

द्रौपदी का स्वर तीखा तथा चुभता हुआ होता है। द्रौपदी कुंती तथा विदुर से कहती है, ''अपमान ! अपमान को तो मै पहचानती हूँ।''[२] महाभारत के विजयी पक्ष में रहकर भी वह पराजित है। अपने पुत्रों का विनाश देखकर उसका मन बिलखता है। अपनी ममता में वह पागल है। द्रौपदी के स्वर में दुखी माँ का स्वर है। अपनी सास कुंती से वह कहती है - ''माँ मेरा मौन टूट गया है। धैर्य नष्ट हो गया सब कुछ बदल कर नया बनाने की मेरी आकांक्षा ज्वार की तरह मेरे छोटे घरोंदों को बहा ले गई।''[३]

महाभारत का युध्द होने के लिए द्रौपदी उतनी ही दोषी है जितने अन्य पात्र। द्रौपदी की वही स्थिती होती है जो युध्द के बाद प्रजा की होती है। इस भयंकर विनाश के लिए वह भी जिम्मेदार है। सामान्य प्रजा की तरह वह रहना चाहती है। इसलिए वह सहानुभूती का पात्र बन जाती है। एक स्वाभिमानी नारी पात्र भी है।

द्रौपदी का यह स्वर प्रजा का प्रतीक बनकर आया है वह कहती है – ''मुझे यही रहने दो। अपनी चक्की में ही पिसने दो मुक्त होने दो। प्रजा को प्रजा ही रहने दो।''[४]

''जुएं पर चढ़ी द्रौपदी की स्थिति उस प्रजा का रूप प्रस्तुत करती है जो अपने अस्तित्व में क्या हूँ, रोटी का तुकडा राजनीतिका उलझा हुआ सूत्र।''[५] द्रौपदी एक चोट खाई हुई औरत है जो प्रजा का ही प्रतिनिधित्व करती है।

मराठी नाटककारों मे विद्याधर पुंडलिक एक प्रतिष्ठित नाटककार के रूप में जाने जाते है। उनकी 'चक्र' नाम की एकांकी विशेष लोकप्रिय है। 'माता द्रौपदी' यह उनका पहला नाटक है। प्रस्तुत नाटक महाभारत की कथा पर आधारित है। पाँच पांडवों की पत्नी द्रौपदी अपने जीवन में अनेक रिश्तों से जुडी दिखाई देती है। भगिनी, प्रेयसी, पत्नी के विविध रूप के साथ माता का विशेष रूप चित्रित करनेवाला 'माता द्रौपदी' यह नाटक है। 'मात द्रौपदी' प्रस्तुत नाटक के शीर्षक में माता का विशेषन होने के कारण मन में माँ के प्रति जो भावनाएँ होती है वह जागृत होती है। नाटक के शुरू में ही युद्धभूमी से लौटनेवाले अपनी पति और पुत्रों की राह देखने वाली द्रौपदी अपने दासी अवंतीका से पूछती है : ''अवंतिके, आपले सैनिक रणांगनावरून परतू लागले का ग!''[६] इससे अपने पुत्रों को मिलने की चाह रखनेवाली भावविभुर माता का दर्शन होता है। अपने अहंकार तथा हटवादी स्वभाव के कारण ही कौरवों की विनाश का स्वप्न वह देखती है। इस कारण धर्मयुध्द हो जाता है।

द्रौपदी के चरित्र से उसके रोमरोम में क्षत्रियवृत्ती जो उसके जीवन को आकार देती है साथ ही उसकी स्त्रीत्व की वृत्ती इन दोनों का साक्षात्कार करने में विद्याधर पुंडलिक सफल हुए है। 'माता द्रौपदी' नाटक में शुरू से ही यह दृषटी प्रवाहशील रहती है। एक क्षत्राणी के जीवन के आनंद का परमोच्च क्षण के संदर्भ में वह कहती है - ''माझा विजयाचा पेला काठोकाठ भरलेला आहे. एक थेंब कमी नाही. स्त्री म्हणून माझ्या ओटीत भरलेलं माप ओसंडून पडलं आई म्हणून माझी कूस धन्य झाली.''[७] एक क्षात्राणी को जो सावधानी होनी चाहिए वह आनंद के क्षण गाफील रहकर समाप्त होती नजर आती है। अश्वत्थामा के संवाद में 'माझा पराभव मी कधीही विसरनार नाही' इस अर्थ को द्रौपदी जान नहीं पाती है। इसलिए नाटक कें अंत में वह कहती है - ''एकशब्द बोलू नकोस अश्वत्थामा, माझी पाची मुलं तू कापलीस सासर-माहेरची कुळं तू मारलीस, कपटानं, अधर्मान मारलीस''[८] इसमें द्रौपदी के मन में उठनेवाली भावनिक पीडा सहजतासे नाटककार ने चित्रित की है। अपने पति तथा पुत्र के विजय के लिए हमेशा मन मे बदले की भावना तथा हर क्षण त्याग की भावना प्रस्तुत नाटक में द्रौपदी के चरित्र से चित्रित है।

द्रौपदी एक सम्राज्ञी के रूप में चित्रित हैं। सुख, सत्ता, संपत्ती, राजमहल में होते हुए भी एक अकेलेपन की जिंदगी वह जीती रहीं। अपने दुख में किसी को उसने शामिल नहीं किया क्योंकी अपना कहनेवाला कोई उसके पास नहीं रहा है। इस संदर्भ में वह भीम को कहती है - ''सम्राज्ञी झाल्यापासून मी पुन्हा दुसऱ्या एका

वनवासात राहते आहे. या वनवासात पुन्हा एकदा मी आणि रात्र, रात्र आणि मी''[६] द्रौपदी इस चरित्र को उजागर करनेवाला 'माता द्रौपदी' यह नाटक द्रौपदी के माता के रूप का चित्रण करता है।

गिरिराज किशोर लिखित 'प्रजा ही रहने दों' नाटक में 'द्रौपदी' तथा विद्याधर पुंडलिक द्वारा वर्णित द्रौपदी दोनों ही पात्र भावनिकता के साथ जुडें है। द्रौपदी एक रानी होकर भी प्रजा ही रहने दो के पक्ष में है, उसे प्रजा से यानी अपनी संतानों से लगाव है, वह उन्हीं का कल्याण चाहती है उसी प्रकार 'माता द्रौपदी' नाटक में अपने मातृत्व का दायित्व निभाती है। हर माता अपने बच्चों का कल्याण ही चाहती है। एक ममतामयी माँ का विशेष चरित्र इन दो नाटकों मे चित्रित होता नजर आता है। सबकुछ होकर भी दोनों चरित्र में अकेलेपन की भावना चित्रित है। अपने स्वार्थ के लिए दोनों चरित्र का उपयोग किया दिखाई देता है। एक स्त्री तथा उसके अंदर भी पीड़ा तथा करूणामय द्रौपदी दोनों नाटककारोंने अपने नाटकों में चित्रित की है। इस प्रकार का साम्य इन दोनों नाटकों मे दिखाई देता है। उसी प्रकार इन पात्रों में वैष्यम्य भी दिखाई देता है, जैसे - विद्याधर पुंडलिक द्वारा 'माता द्रौपदी' नाटक में स्वाभिमानी, हटवादी, संकीर्ण मनोवृत्तीवाली, स्वार्थी, जिद्दी, भविश्य में रममान हुई दिखाई देती है। इसके साथ गिरीराज किशोर द्वारा वर्णित द्रौपदी प्रजा का प्रतीक, अन्याय सहनेवाली सहनशील, बृहत विचारधारावाली, स्वाभिमानी नारी चरित्र को उजागर करती है।

दोने चरित्र के माध्यम से नारी चरित्र की व्यथा, मनस्थिति पर प्रकाश डाला गया है। पौरानिक हो या आधुनिक बीसवीं सदी हो या इक्कीसवी, स्त्री के प्रश्न बदल गये है; शोषण कम नहीं हुआ उसका रूप मात्र बदल गया है।

इस प्रकार के अध्ययनद्वारा दो अलग - अलग भाषाओं के एक ही चरित्र पर किए गए विचारों को अध्ययन के द्वारा पाठकों के सामने लाया जा सकता है।

निष्कर्ष :

१. 'द्रौपदी' इस पौरानिक चरित्र का विश्लेषण करना ही मुख्य उद्देश है।

२. दोनों नाटक में चित्रित चरित्र की अंतर्मन की पीड़ा को चित्रित किया गया है।

३. चरित्र में चित्रित द्वंद्वग्रस्त स्थिति को चित्रित किया गया है।

४. द्रौपदी का चरित्र ही आत्मसम्मान की रक्षा करता हुआ दिखाई देता है।

संदर्भसूची :

1- गिरिराज किशोर, प्रजा ही रहने दो द्वितीय संस्करण - १९८७, पृ.क्र. **55**

2- गिरिराज किशोर, प्रजा ही रहने दो द्वितीय संस्करण - १९८७, पृ.क्र. **56**

3- गिरिराज किशोर, प्रजा ही रहने दो द्वितीय संस्करण - १**98**७, पृ.क्र. १०**9**

4- गिरिराज किशोर, प्रजा ही रहने दो द्वितीय संस्करण - १**98**७, पृ.क्र. १००

5- जयदेव तनेजा, आज के हिंदी रंगनाटक, पृ.क्र. १**58**

6- विद्याधर पुंडलिक, माता द्रौपदी प्रथम संस्करण - १**9**७२, पृ.क्र. ०३

7- विद्याधर पुंडलिक, माता द्रौपदी प्रथम संस्करण - १**9**७२, पृ.क्र. २७

8- विद्याधर पुंडलिक, माता द्रौपदी प्रथम संस्करण - १**9**७२, पृ.क्र. ७७

9- विद्याधर पुंडलिक, माता द्रौपदी प्रथम संस्करण - १**9**७२, पृ.क्र. ६**9**

&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&